संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

# ऋषि प्रसाद

मूल्य : ₹ ७ भाषा : हिन्दी
प्रकाशन दिनांक : १ जून २०२६
वर्ष : ३५ अंक : १२ (निरंतर अंक : ४०२)
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

## तुम आत्मा हो, परमात्मा के अमृतपुत्र हो । अतः

भूतकाल को याद करके
काहे को तप मरना ?

भविष्य की चिंताएँ कर-करके
काहे को परेशान होना ?

वर्तमान में भगवद्
भाव में मस्त रहो ।

## सभी साधकों, भक्तों के लिए एक स्वर्णिम अवसर

## गुरुज्ञान-प्रचार योजना : पायें पूज्य बापूजी द्वारा स्पर्शित, आशीर्वाद रूप उपहार

### दिव्य प्रसाद

**कैसे पायें लाभ ?**

ऋषि प्रसाद के १०० या ऋषि दर्शन के ५० सदस्य बनाने पर ।

इस दिव्य प्रसाद से आपको प्राप्त होगी

महालक्ष्मी, आर्थिक समृद्धि

पारिवारिक सुख-शांति

व्यवसाय, धन-धान्य में वृद्धि

पुण्यकर्म में सहायता

### तुलसी कंठी या करमाला

स्वास्थ्य, पुण्य, सद्गति प्रदायक

**कैसे पायें लाभ ?**

ऋषि प्रसाद के २५ या ऋषि दर्शन के १० सदस्य बनाने पर ।

**योजना का लाभ लेने हेतु क्षेत्रीय ऋषि प्रसाद कार्यालय से सम्पर्क करें ।**

**अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क :** ऋषि प्रसाद कार्यालय, अहमदाबाद,
दूरभाष : (०७९) ६१२१०७१४/७४२ ९५१२०८१०८१

# इससे बड़ा आशीर्वाद क्या हो सकता है ? - पूज्य बापूजी

'ऋषि प्रसाद' के सेवाधारियों की सेवा सराहनीय है । जो भी सेवा करते हैं वे अपना कल्याण करने के लिए कर रहे हैं । भोग-वासना को मिटाने के लिए कर्मयोग कर रहे हैं ।

जो सेवाधारी हैं उनकी सेवाओं से लाखों लोगों तक हाथों-हाथ 'ऋषि प्रसाद' पहुँचती है लेकिन हम उनको शाबाशी नहीं देंगे । वे जानते हैं कि 'बापूजी हमको नकली दुनिया से बचाते हैं, नकली शाबाशी से बचाते हैं और बापूजी ऐसी चीज देना चाहते हैं जो भगवान ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा ब्रह्मज्ञानियों के हृदय में लहराती है, स्फुरित होती है... वह खजाना देना चाहते हैं ।'

'तुम्हारे जीवन में दुःख न आये, तुम सदा सुखी रहो' - यह आशीर्वाद हम नहीं देते हैं लेकिन 'तुम सुख और दुःख के भोक्ता न बनो, उनको साधन बना लो । सुख आये तो बहुजनहिताय उसको बाँटो और दुःख आये तो उसको देखो । **बहुत गयी थोड़ी रही... आया है सो जायेगा...** संयम और सोऽहम्... दुःख का द्रष्टा दुःखी नहीं होता, सुख का द्रष्टा सुखी नहीं होता, अतः सुख को बाँटकर आनंदमय हो जाओ ।

**यह भी देख, वह भी देख ।**
**देखत देखत ऐसा देख कि**
**मिट जाय धोखा, रह जाय एक ।।**

सोऽहम्... शिवोऽहम्... आनन्दोऽहम्... । तुम अपने आत्मा को जानो, जहाँ सुख-दुःख तुच्छ हो जायें तथा संसार स्वप्न हो जाय ।' बस ! इससे बड़ा आशीर्वाद भी कोई हो सकता है, ऐसा मुझे नहीं लगता ।

**'ऋषि प्रसाद ब्रोशर'** ऋषि प्रसाद अभियान में सेवाधारियों के लिए अत्यंत सहायक है । अपने परिचितों को उपहार के रूप में इसे दे सकते हैं । **प्राप्ति-स्थल :** नजदीकी ऋषि प्रसाद कार्यालय
(हिन्दी व गुजराती में उपलब्ध) ₹ २०

# ऋषि प्रसाद

*हिन्दी, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़, अंग्रेजी व बंगाली भाषाओं में प्रकाशित*

वर्ष : ३५ अंक : १२ (निरंतर अंक : ४०२)
प्रकाशन दिनांक : १ जून २०२६
मूल्य : ₹ ७ आवधिकता : मासिक
पृष्ठ संख्या : ३६ (आवरण पृष्ठ सहित)
भाषा : हिन्दी|अधिक ज्येष्ठ-ज्येष्ठ-आषाढ़, वि.सं. २०८३

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक : रूपनारायण भगवानसिंह लोधी
मुद्रक : विवेक सिंह चौहान
प्रकाशन स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५
सम्पादक : श्रीनिवास र. कुलकर्णी
सहसम्पादक : डॉ. प्रे.खो. मकवाणा
संरक्षक : श्री सुरेन्द्रनाथ भार्गव
पूर्व मुख्य न्यायाधीश, सिक्किम; पूर्व न्यायाधीश, राज. उच्च न्यायालय; पूर्व अध्यक्ष, मानवाधिकार आयोग, असम व मणिपुर



कृपया अपना सदस्यता शुल्क या अन्य किसी भी प्रकार की नकद राशि रजिस्टर्ड या साधारण डाक द्वारा न भेजें। इस माध्यम से कोई भी राशि गुम होने पर हमारी जिम्मेदारी नहीं रहेगी। **अपनी राशि मनीऑर्डर या डिमांड ड्राफ्ट ['हरि ओम मैन्युफेक्चरर्स' (Hari Om Manufactureres) के नाम अहमदाबाद में देय] द्वारा ही भेजने की कृपा करें।**



**सम्पर्क पता :** 'ऋषि प्रसाद', संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुज.)
फोन : (०७९) २७५०५०१०-११, ६१२१०८८८
केवल 'ऋषि प्रसाद' पूछताछ हेतु : (०७९) ६१२१०७४२
९५१२०८१०८१ 'Rishi Prasad'
ashramindia@ashram.org
www.ashram.org www.rishiprasad.org
www.asharamjibapu.org



**सदस्यता शुल्क (डाक खर्च सहित) भारत में**

| अवधि | शुल्क |
|---|---|
| वार्षिक | ₹ ७५ |
| द्विवार्षिक | ₹ १४० |
| पंचवार्षिक | ₹ ३४० |
| आजीवन (१२ वर्ष) | ₹ ७५० |

**विदेशों में**

| अवधि | सार्क देश | अन्य देश |
|---|---|---|
| वार्षिक | ₹ ६०० | US $ 20 |
| द्विवार्षिक | ₹ १२०० | US $ 40 |
| पंचवार्षिक | ₹ ३००० | US $ 80 |
| आजीवन (१२ वर्ष) | ₹ ६००० | US $ 200 |

Subject to Ahmedabad Jurisdiction.


## इस अंक में...


❖ **साधना प्रकाश** ❊ सुबह उठकर क्या करें कि पूरा दिन सँवर जाय ४
❖ **नहीं चुका सकते आत्मज्ञानी गुरुओं की करुणा-कृपा का बदला** ५
❖ **सत्संग पराग** ❊ वेदांत संदेश - भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज ७
❖ **अंतर्राष्ट्रीय समाचार** ❊ कैसे थमेगी मन की महामारी ? - धीरज चव्हाण ११
❖ **पूज्य बापूजी के जीवन-प्रसंग** ❊ गुरुदेव के प्रेरणादायी संस्मरण १४
❖ **भक्तों के अनुभव** ❊ रोग-कष्ट के अंधकार में गुरुकृपा ने किया उजाला १५
❖ **सांस्कृतिक समाचार** ❊ आस्था बेची नहीं जाती - प्रीतेश पाटिल १६
❖ **विद्यार्थी संस्कार** ❊ कौत्स और राजा रघु की निष्ठा व त्याग १८
❊ सफलताएँ वे ही पाते हैं... १९
❖ **परिप्रश्नेन** ❊ भगवत्प्रेरणा में डटने की युक्ति १९
❖ **साहस की मिसाल : चन्द्रशेखर आजाद** २०
❖ **महिला उत्थान** ❊ बाहर के आश्रय मत खोजो, परम आश्रय में डूबो २१
❖ **प्रेरक प्रसंग** ❊ गुरु की अवज्ञा का दुष्परिणाम २२
❖ **आगामी पुण्यदायी तिथियाँ व योग** २३
❖ **तत्त्व दर्शन** ❊ सच्चिदानंदस्वरूप के अज्ञान से होती हैं ये तीन भ्रांतियाँ २४
❖ **संत चरित्र** ❊ परमहंस संत भूमानंदजी के जीवन-प्रसंग २५
❖ **संतों की हितभरी अनुभव-वाणी** २६
❖ **इससे आपका जीवन सुखमय, मनोहर बन जायेगा** २७
❖ **आप कहते हैं...** ❊ नयी पीढ़ी की चरित्र-निर्मात्री : ऋषि प्रसाद - आचार्य श्री अभिमन्यु त्रिवेदी, ज्योतिषविद् एवं कथाकार २७
❊ ऐसे संतों की रक्षा के लिए सभीको आगे आना चाहिए - स्वामी दिव्य सागरजी ३३
❖ **मजहब से ऊपर आत्मज्ञान की डगर** २८
❖ **सेवा संजीवनी** ❊ इस सेवा ने पहुँचाया गुरु-चरणों में - रणवीर सिंह चौधरी २९
❊ ऋषि प्रसाद ने बदली जीवन की दिशा - अजीत घोलवे ३३
❊ सेवा का संकल्प और गुरुकृपा का फल - विम्मी विजय गांधी ३३
❖ **स्वास्थ्य समाचार** ❊ वर्षा ऋतु में कैसे करें स्वास्थ्य की रक्षा ? ३०
❊ ...इससे ८० प्रकार की वायु-संबंधी बीमारियाँ बैठ जायेंगी ३०
❊ स्वास्थ्यवर्धक एवं उत्तम पथ्यकर 'परवल' ३१
❊ बारिश के दिनों में लाभदायी कुछ घरेलू प्रयोग ३१
❖ **माँगने से ये ५ चीजें चली जाती हैं** ३२
❖ **अनमोल कुंजियाँ** ❊ घर के झगड़े शांत करने का उपाय ३४
❊ केवल १ मिनट के प्रयोग से छा जायेगी बुद्धि में भगवत्कृपा ३४
❊ व्याधि-निवारक वैदिक मंत्र ❊ अन्नपूर्णा प्रयोग ३४



## विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग

अनादि
रोज सुबह ६:३० व रात्रि १०:३० बजे टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबल

DIGIANA DIVYA JYOTI
रोज रात्रि १० बजे म.प्र. में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९)

Asharamji Bapu

सेवाकार्य भी
Asharamji Ashram

Mangalmay Digital

यूट्यूब चैनल्स

डाउनलोड करें : Rishi Prasad App (ऋषि प्रसाद की ऑनलाइन सदस्यता हेतु), Rishi Darshan App (ऋषि दर्शन विडियो मैगजीन की सदस्यता हेतु) एवं Mangalmay Digital App

# सुबह उठकर क्या करें कि पूरा दिन सँवर जाय

(पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत से)

सुबह नींद में से उठकर २ मिनट बिस्तर पर बैठ जाओ, अंतर्यामी की स्मृति करो । अलार्म कितना ही बजे और नौकर कितना ही चिल्लाये, पत्नी कितनी ही चिल्लाये लेकिन वह उठानेवाला नहीं हो तो क्या आप उठ सकते थे ? पति कितना भी बुलाये किंतु पतियों का पति (अंतर्यामी परमात्मा) अगर हृदय में नहीं होता तो पति भी नहीं उठा सकता है, पत्नी भी नहीं उठा सकती है। घड़ी अलार्म बजा सकती है, कम्बल नहीं हटा सकती, नौकर कम्बल हटा सकता है परंतु तुम्हें उठा नहीं सकता, उठाता तो वही पिता है, परमात्मा है ।

तुम गजब के भुलक्कड़ हो भाई ! जो उठा रहा है उसीको भूले जा रहे हो, जो अन्न पचा रहा है उसीको भूले जा रहे हो, जो खिला रहा है उसीको भूले जा रहे हो, जो कार्यालय (ऑफिस) तक पहुँचा रहा है उसीको भूले जा रहे हो । तो मेरी तो प्रार्थना है कि सुबह नींद में से उठो तब इस भूल को मिटाओ ।

हृदयपूर्वक कहो कि 'प्रभु ! आज के दिन मैं तुझे नहीं भूलूँगा, मैं भुलक्कड़-शिरोमणि नहीं बनूँगा, तुझे याद करता रहूँगा क्योंकि तू ही मेरा है ।' मेरा यह आग्रह नहीं कि तुम उसे राम कहो... तुम उसे कृष्ण कह दो, शिव कह दो । मेरा यह दुराग्रह नहीं कि तुम उसे अल्लाह या गॉड ही कहो... तुम्हें जो रुचता है वह कह दो, सभी नाम उसके हैं । वह सब जानता है कि तुम किसको पुकार रहे हो । तो उठकर उसकी स्मृति करो कि 'प्रभु ! रोम-रोम में तू रम रहा है इसलिए तेरा नाम राम है, तू ही सबको कर्षित-आकर्षित करता है इसलिए तेरा नाम कृष्ण रखा है, तू ही हाड़-मांस के इस पिंजर को भी कल्याणमय बना रहा है इसलिए तेरा नाम शिव (अर्थात् कल्याणस्वरूप) है । हे प्रभु ! रातभर तुझमें इन्द्रियों ने, बुद्धि ने विश्रांति पायी है, अब मैं उठा हूँ । ॐ शांति... मैं तेरा, तू मेरा !'

तुम सौ-सौ यज्ञ करो लेकिन पुण्य होगा आधा । महापुरुषों ने कहा है कि डेढ़ पुण्य है और डेढ़ ही पाप है । अपने को शरीर मानना और उस परमात्मा को भूले रहना यह पूरा पाप है और बाकी सारे पाप छोटे-छोटे हैं, सब मिलाकर आधा पाप । और अपने को उसका और उसको अपना मानना यह पूरा पुण्य है, बाकी यज्ञ-याग, यह-वह... कुल मिला के आधा पुण्य है । कारण कि यज्ञ तो बाहर होता है और 'मैं तेरा और तू मेरा' यह भीतर होता है, अंतरंग है, नजदीकी है । तीर्थयात्रा तो बाहर होती है पर 'मैं तेरा और तू मेरा' यह यात्रा भीतर से शुरू होती है। इससे आपको बहुत लाभ होगा, मैंने बहुत फायदा उठाया है, मेरे लाखों-करोड़ों शिष्यों ने बहुत फायदा उठाया है तो आप भी फायदा उठाइये ।

सुबह उठकर शांत बैठ जाइये बिस्तर पर । श्वास चल रहा है उसको देखते जाइये । श्वास भीतर जाय तो 'शांति', बाहर आये तो '१'... इस प्रकार १५-२०-५० श्वास गिनिये, बस !

उस शांति के अंतर को बढ़ाइये, आपका दिनभर आज तक के दिनों से बिल्कुल बदला हुआ मिलेगा आपको । यह कर सकते हो आप । हृदय-मंदिर में आना आपका कर्तव्य है, आपका

## पूज्यपाद भगवत्पाद
## साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज की पावन अमृतवाणी

(३१ अक्टूबर १९५६ शाम को अद्वैत आश्रम, अजमेर की नींव-उद्घाटन के अवसर पर प्रदत्त सत्संग)

# वेदांत संदेश

हम जो भी जीव देखते हैं उन सभीके जीने का उद्देश्य सुख, शांति, सच्चा आनंद ही है। जैसे नदियाँ रात-दिन लगातार समुद्र से मिलने के लिए दौड़ती रहती हैं, वैसे ही मनुष्य भी लगातार सिर्फ उस नित्य आनंद, अखंड आनंद में स्थित होने के लिए ही प्रयत्न करता रहता है।

### सभी शास्त्रों के सरताज वेदों का लाभ लो

आपने सुना कि आपको हिन्दू साहित्य भंडार से मुँह नहीं मोड़ना चाहिए। एक समय था जब भारत में वेदवाणी की ध्वनि सुनी जाती थी। वेदवाणी के लिए क्या कहना, यह दिव्य वाणी है। वेदों के ज्ञान के मुकाबले में दूसरा कोई ज्ञान ठहर नहीं सकता। दुनिया में सबसे प्राचीन ग्रंथ वेद ही हैं। उपनिषद् वेदों के ज्ञान भाग हैं। श्री वेदव्यासजी, पतंजलि, कणाद व दूसरे दार्शनिकों ने उपनिषदों से ही प्रमाण दिये हैं। उपनिषदों में ज्ञान का भंडार भरा हुआ है, वह सुनो।

आप कहोगे कि सुनने से क्या लाभ होगा ? गुरु नानकजी फरमाते हैं :

सुणिऐ अंधे पावहि राहु ॥

अंधे कौन हैं ? जिनके पास ज्ञानचक्षु नहीं हैं। ऐसे लोगों को रास्ता मिलता है। भक्ति क्या है, योग क्या है, धर्म क्या है, ज्ञान क्या है, परमेश्वर क्या है, जीव क्या है, यह संसार क्या है, साधारण धर्म क्या है, विशेष धर्म क्या है, राजयोग क्या है ? नैमित्तिक कर्म, काम्य कर्म, अध्यात्म कर्म, अधिदैव कर्म, अद्भुत कर्म क्या हैं ? श्रवण ज्ञान, मनन ज्ञान, साक्षात् ज्ञान क्या है ? इन सब बातों को सुनने पर ज्ञान होता है। सुनते-सुनते अज्ञानियों को जानकारी होती है कि कर्तव्य क्या है व अकर्तव्य क्या है। क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। माताएँ, देवियाँ - सबको जानकारी होती है, ज्ञान प्राप्त होता है, इसलिए सुनो।

सुणिऐ सासत सिम्रिति वेद ॥

पहले आपने सुना कि वेद सभी ग्रंथों के सरताज हैं। हिन्दू साहित्य भंडार में ४५७८ मुख्य ग्रंथ हैं। वेद उन्हीं सभी शास्त्रों के सरताज हैं। इसलिए गुरु नानकदेवजी ने भी पहले वेदों का नाम लिया है। उन वेदों की वाणी सुनो। दूसरे शास्त्र, षड्दर्शन (६ शास्त्र) भी सुनो। श्रवण करो, स्मृतियाँ सुनो। याज्ञवल्क्य आदि स्मृतियों का, गीता का श्रवण करो, इससे आपके भ्रम दूर होंगे।

### आत्मबोध क्यों व कैसे ?

लोग कहते हैं कि 'वेदांती तो जगत का नाश कर देते हैं।' ऐसा कहाँ है ? वेदांती जगत का नाश नहीं करते हैं। भाई ! बात ऐसी है कि वेदांती उसे थोड़ा भी हाथ नहीं लगाते हैं। वे तो उसे वैसा-का-वैसा रहने देते हैं। जगत जैसा है, वैसा ही पड़ा रहता है। भाई ! उसे वैसा ही पड़ा रहने दो परंतु उसके तत्त्व (यथार्थ स्वरूप) को जानो -

# कैसे थमेगी मन की महामारी ?

## अशांति की आग में झुलस रहे हैं अरबों लोग

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अखबार खोलिये... दर्दभरी खबरों से पन्ने भरे पड़े हैं – परीक्षा में असफल विद्यार्थी ने जीवन का दीप बुझा दिया, प्रेमिका के ठुकराने पर युवक फाँसी पर लटक गया, पारिवारिक कलह से टूटी गृहिणी ने स्वयं को समाप्त कर लिया, धन का अम्बार धरा रह गया और धनाढ्य ने जीवन की डोर काट ली । विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के आँकड़े रोंगटे खड़े कर देते हैं – आज १०० करोड़ से अधिक लोग मानसिक विकार से पीड़ित हैं और हर ४० सेकंड में एक आत्महत्या होती है ।

१५ से २९ वर्ष के युवाओं में आत्महत्या मृत्यु का तीसरा प्रमुख कारण बन चुकी है । इसमें उस अदृश्य विष का भी बड़ा हाथ है जो विदेशी औद्योगिक तंत्र चुपचाप, योजनाबद्ध रूप से भावी पीढ़ी को पिला रहे हैं । व्यवसायीकरण के लिए विदेशी कम्पनियाँ सोशल मीडिया, अश्लीलता और व्यसन की लत बढ़ाने के लिए नये-नये जाल बिछा रही हैं, जिससे एक ऐसी पीढ़ी तैयार हो रही है जो बाहर से भले स्वस्थ दिखे लेकिन भीतर से मानसिक रुग्ण होती जा रही है । न्यूयॉर्क

विश्वविद्यालय स्थित स्टर्न स्कूल ऑफ बिजनेस के सामाजिक मनोवैज्ञानिक जोनाथन हाइट ने अपनी पुस्तक में लिखा है : '२०१० से २०१५ के बीच अमेरिकी किशोरों का सामाजिक जीवन बड़े पैमाने पर स्मार्टफोन-केन्द्रित हो गया, जिसके चलते सोशल मीडिया और अन्य इंटरनेट-आधारित गतिविधियों से उनका निरंतर जुड़ाव बना रहने लगा । मेरा मानना है कि इस परिवर्तन ने २०१०-२०१३ में किशोरों में आरम्भ हुई मानसिक रोगों की तीव्र लहर को जन्म देने में सबसे बड़ी भूमिका निभायी । मानसिक स्वास्थ्य की समस्या में वृद्धि केवल अमेरिका तक सीमित नहीं रही, लगभग उसी समय यही प्रवृत्ति यू.के., कनाडा और अन्य देशों में भी किशोरों के बीच देखी गयी ।'

**जरा सोचिये, ऐसे विषैले वातावरण में हमारे बच्चे कब तक आत्मघाती विचारों से अपने को बचा पायेंगे ? क्या कोई ऐसा रक्षाकवच नहीं है जो उन्हें इस पतन से बचा सके ?**

मनोवैज्ञानिक अध्ययन बताते हैं कि 'सोशल मीडिया पर दूसरों की चकाचौंधभरी जिंदगी से निरंतर तुलना चिंता और हीन भावना को जन्म देती है । 'लाइक' न मिलें तो नकारात्मक विचार घर करते हैं, मिलें तो और मिलने की चाहत बढ़ती है – यह चक्र मन को चैन नहीं लेने देता । स्क्रीन का साथ बढ़ता है तो रिश्तों से दूरी बढ़ती है और अकेलापन गहरा होता जाता है । चलचित्रों और विज्ञापनों में उत्तेजनापूर्ण दृश्यों की निरंतर बौछार मन को भीतर से बेचैन, आवेशी और अस्थिर बना देती है ।' जरा सोचिये, ऐसे विषैले वातावरण में हमारे बच्चे कब तक आत्मघाती विचारों से अपने को बचा पायेंगे ? क्या कोई ऐसा रक्षाकवच नहीं है जो उन्हें इस पतन से बचा सके ?

# आस्था बेची नहीं जाती

छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय ने हाल ही में एक ऐतिहासिक निर्णय सुनाया। छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले के आदिवासी गाँवों में ग्रामसभाओं द्वारा ईसाई पादरियों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाया गया। इसे 'असंवैधानिक' घोषित करने की माँग को अस्वीकार करते हुए उच्च न्यायालय ने इसे संवैधानिक ठहराया और कहा : 'दूर-दराज के आदिवासी क्षेत्रों में प्रायः मिशनरियों पर यह आरोप लगाया जाता है कि वे अशिक्षित और निर्धन परिवारों को लक्ष्य बनाती हैं तथा उन्हें धर्मांतरण के बदले में आर्थिक सहायता, निःशुल्क शिक्षा, चिकित्सीय सुविधा अथवा रोजगार का प्रलोभन देती हैं। ऐसी प्रवृत्तियाँ स्वेच्छापूर्ण आस्था की भावना को विकृत कर देती हैं और सांस्कृतिक दबाव के समान होती हैं।'

**सांस्कृतिक समाचार**
**Cultural News**

**'धर्मांतरण : एक सांस्कृतिक व सामाजिक संकट'**
**- छ.ग. उच्च न्यायालय**

फरवरी २०२६ में सर्वोच्च न्यायालय ने ईसाई धर्म प्रचारकों द्वारा उच्च न्यायालय के उक्त निर्णय को दी गयी चुनौती को साफ तौर पर खारिज कर दिया। भारतीय संविधान का अनुच्छेद २५ धर्म-प्रचार की स्वतंत्रता देता है किंतु १९७७ में सर्वोच्च न्यायालय ने **रेव. स्टैनिस्लॉस बनाम मध्य प्रदेश और अन्य** – इस केस में स्पष्ट किया कि 'अपने धर्म का प्रचार करने का अधिकार किसी अन्य व्यक्ति को धर्मांतरित करने का अधिकार कदापि नहीं देता। बल, कपट अथवा प्रलोभन से किया गया धर्मांतरण धार्मिक समानता के सिद्धांत का उल्लंघन और सामाजिक समरसता को बाधित करता है।'

स्वामी विवेकानंदजी ने धर्मांतरण को धर्म-विकृति माना है। उन्होंने अमेरिका में अपने भाषण में ईसाइयों को सम्बोधित करते हुए

कहा था : ''आप लोगों को प्रशिक्षण देते हैं, उन्हें शिक्षित करते हैं, वस्त्र प्रदान करते हैं और वेतन देते हैं, किसलिए ? इसलिए कि वे मेरे देश में आकर मेरे पूर्वजों, मेरे धर्म और मेरी समस्त परम्पराओं को कोसें और अपमानित करें। आप ईसाई लोग गैर-ईसाइयों की आत्मा के उद्धार के लिए मिशनरियों को भेजने में इतनी रुचि रखते हैं, आप उनको भुखमरी से बचाने का प्रयास क्यों नहीं करते ? भारत में भयंकर अकालों के समय हजारों लोग भूख से मर गये, फिर भी आप ईसाइयों ने कुछ नहीं किया।''

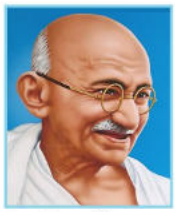

महात्मा गांधी ने मिशनरी धर्मांतरण को 'शुद्ध व्यापार' कहा था। गांधीजी ने १९३५ में अपनी 'हरिजन' पत्रिका में लिखा था : 'यदि मेरे पास सत्ता होती और मैं कानून बना सकता तो मैं सभी प्रकार के धर्मांतरण को रोक देता।'

१९३७ में उन्होंने लिखा कि 'भारत तथा अन्य स्थानों पर आज जिस प्रकार का धर्मांतरण हो रहा है वह एक ऐसी भूल है जो विश्व के शांति की ओर अग्रसर होने में सम्भवतः सबसे बड़ी बाधा है। एक ईसाई क्यों चाहे कि वह किसी हिन्दू को ईसाई बनाये ? यदि वह हिन्दू एक अच्छा या धर्मपरायण मनुष्य है तो वह उससे संतुष्ट क्यों नहीं हो सकता ?'

यह एक कड़वा सच है कि प्रलोभन से हुए धर्मांतरण से न तो धर्मांतरित व्यक्ति का वास्तविक

## विद्यार्थी संस्कार

# कौत्स और राजा रघु की निष्ठा व त्याग

(पूज्य बापूजी के सत्संग-वचनामृत से)

(पिछले अंक में हमने पढ़ा कि किस प्रकार गुरुकुल से विद्याध्ययन पूरा करके कौत्स अपने गुरु को दिये हुए वचन को निभाने में लगा रहता है और आखिर राजा रघु को खोजकर अपनी आवश्यकता उन तक पहुँचाता है । **अब आगे...**)

रघु ने गहरी साँस ली । प्राणायाम किया । प्राणशक्ति जितनी सूक्ष्म होती है उतना संकल्प बलवान होता है ।

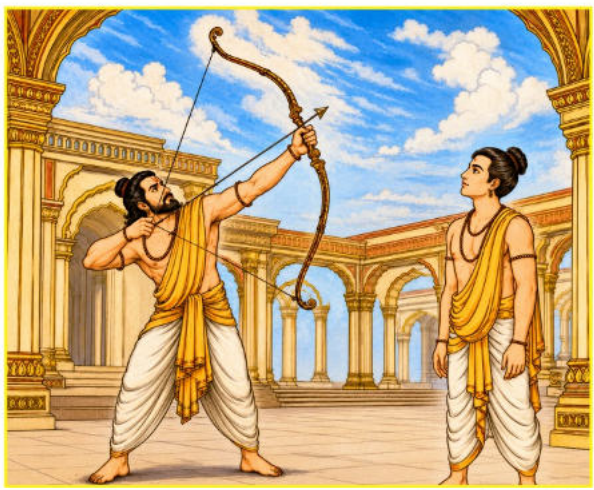

धर्मात्मा रघु ने कौत्स से कहा : ''मैं क्षत्रिय हूँ, तुम ब्राह्मण हो । माँगना तुम्हारा अधिकार है और देना मेरा कर्तव्य है । देने के लिए मेरे पास द्रव्य नहीं है तो मैं युद्ध करके भी ला सकता हूँ । इस धरती के लोगों से क्या युद्ध करना ! और वह युद्ध कब निपटे ? मैं तो अपने बाण का निशाना बनाता हूँ कुबेर भंडारी को ।''

रघु ने उठाया धनुष । शरसंधान किया । कुबेर को ललकारा कि 'या तो चौदह करोड़ सुवर्णमुद्राओं की वर्षा कर दो या युद्ध के लिए तैयार हो जाओ ।' देवताओं के खजांची के साथ युद्ध करने का सामर्थ्य धर्मात्माओं में होता है । दुरात्मा बेचारे क्या कर सकते हैं !

कुबेर को पता चला कि 'अरे ! ये तो राजा रघु हैं ! राजा रघु से युद्ध ! ना... ना... ना... असम्भव !' कुबेर भंडारी ने राजा के कोषगृह में सुवर्णमुद्राओं की वर्षा कर दी । रघु ने कौत्स से कहा : ''ले ले ये सुवर्णमुद्राएँ ।'' कौत्स ने गिनकर चौदह करोड़ सुवर्णमुद्राएँ ले लीं । फिर भी काफी बच गयीं । रघु ने कहा : ''मैंने तेरे लिए ही ये सुवर्णमुद्राएँ मँगवायी हैं, अपने लिए नहीं । अतः हे विप्रकुमार ! ये सारी सुवर्णमुद्राएँ तू ही ले जा ।''

कौत्स कहता है : ''मुझे गुरुदक्षिणा में चौदह करोड़ देनी हैं, इतनी मैंने ले लीं । इससे एक भी ज्यादा मुझे नहीं चाहिए ।''

रघु बोले : ''ये मुद्राएँ तेरे निमित्त आयी हैं । इन्हें लेना मेरा हक नहीं ।''

कितना धर्म का अनुशासन स्वीकार किया है ! अपने मन पर कितना संयम है ! लोग घोड़े पर जीन रख के, रकाब बाँध के उसमें पैर रखकर सवारी करते हैं । ऐसे ही मन पर यदि धर्म का जीन रखकर और संयम की रकाब बाँध के सवारी की जाय तो घोड़ा तो एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाता है परंतु मनरूपी घोड़ा जीवात्मा को परमात्ममय बना देता है ।

कौत्स बोलता है : ''राजन् ! मुझे जितनी आवश्यक हैं उतनी ही मुद्राएँ लूँगा । ज्यादा लेकर मैं परिग्रह क्यों करूँ ? अपना हृदय क्यों खराब करूँ ?''

दाता तो देकर छूट जाता है । आजकल लेनेवाला इतना कंगाल है कि उसका पेट नहीं भरता । देनेवाला इतना दरिद्र है कि उसके दिल

# साहस की मिसाल : चन्द्रशेखर आजाद

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

महान देशभक्त, क्रांतिकारी, वीर चन्द्रशेखर आजाद बड़े ही दृढ़प्रतिज्ञ, ईश्वर-परायण, बहादुर, संयमी और सदाचारी थे । उनकी माँ का नाम था जगरानी देवी और पिता का नाम था पंडित सीताराम तिवारी । बालक चन्द्रशेखर प्राथमिक शिक्षा के बाद आगे की पढ़ाई के लिए माता-पिता को बिना बताये घर से भागकर काशी के संस्कृत विद्यापीठ में भर्ती हो गया था । उन दिनों वहाँ असहयोग आंदोलन की लहर चल रही थी । उसमें एक दिन बालक चन्द्रशेखर भी पकड़ा गया ।

**२३ जुलाई : चन्द्रशेखर आजाद जयंती पर विशेष**

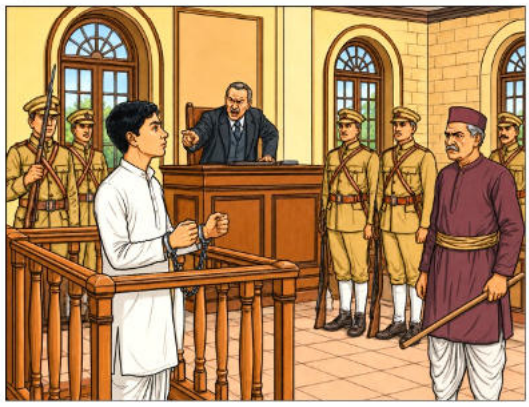

पारसी मजिस्ट्रेट मि. खेरफाट के समक्ष उसे पेश किया गया । वह जुल्मी न्यायाधीश बड़ा हरामी था, बड़ा कड़क था । जेलर भी बड़ा जुल्मी था, उसकी भी बड़ी धाक थी । उसका नाम सुनकर बड़े-बड़े क्रिमिनल लोगों के कपड़े गीले हो जाते थे, रंगीन भी हो जाते थे । फिर भी चन्द्रशेखर को जब कटघरे में लाया गया और मजिस्ट्रेट ने पूछा : ''तुम्हारा नाम क्या है ?''

तो १४ साल के चन्द्रशेखर ने सीना तानकर बोला : ''आजाद ।''

''ऐं, आजाद हो ?'' ''हाँ, आजाद ।''

''पिता का नाम क्या है ?''

''स्वतंत्रता ।''

''कहाँ रहते हो ?''

''जेलखाना ।''

न्यायाधीश वैसे ही कड़क था और फिर इस स्वतंत्रता-संग्राम सेनानी ने ऐसी खरी बात सुना दी तो चिढ़कर बोला : ''इस लड़के को अभी पता नहीं कि सजा क्या होती है । १५ बेंत गिन के मारे जायें ।''

शरीर पर दवाई लगा के फिर तेल में भीगा हुआ बेंत मारते थे तो चमड़ी उखड़कर आ जाती थी, ऐसी सजा देते थे अंग्रेज लोग, इतने क्रूर थे । जल्लाद ने पहला बेंत मारा 'सटाक' !... चमड़ी उखड़ के आयी । चन्द्रशेखर कहता है : ''भारत माता की जय !'' दूसरा बेंत मारा 'सटाक' ! बोले : ''भारत माता की जय !''

१५ 'सटाकें' जेलर गिनता गया और जो मारनेवाला था वह भी अधिक-से-अधिक बल लगाकर मारता गया परंतु आजाद के चेहरे पर शिकन नहीं । पीठ की चमड़ी तो कटकर लटक गयी थी, खून की धार बह रही थी परंतु चेहरे पर तो वही भाव थे कि 'भारत माता के लिए एक शरीर नहीं, हजार शरीर चले जायें फिर भी मेरा आत्मा अमर है । ओऽऽऽम् ओऽऽऽम् ओऽऽऽम्...'

बेंतों की सजा के बाद जेल के नियमानुसार जब जेलर ने उसे ३ आने दिये तो चन्द्रशेखर ने यह कहते हुए वे पैसे उसके मुँह पर दे मारे कि ''इन पैसों से वह अपने अंग्रेजी आकाओं के लिए दावत का प्रबंध कर ले ।''

जब वह बेंत खाकर बाहर रिहा हुआ तो काशी के लोगों ने उसका जयघोष किया । मंच बनाया गया, उसका स्वागत हुआ । तब से वे चन्द्रशेखर आजाद कहलाने लगे । उनकी माँ और पिता ने

# मजहब से ऊपर आत्मज्ञान की डगर

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

सिंध में एक संत हो गये साँईं टेऊँरामजी। उनके पास हिन्दू तो आते थे, मुसलमान भी उनकी प्रेमाभक्ति के रंग से अपने को रँगने की हिम्मत कर लेते थे। रमजान नाम का एक मुसलमान लड़का उनका बड़ा भगत बन गया, बोले : ''गुरुजी ! आप हमें मंत्र दीजिये।''

**१९ जुलाई : संत टेऊँरामजी जयंती पर विशेष**

टेऊँरामजी ने कहा : ''मैं मंत्र दूँगा और साधना बताऊँगा तो मुल्ला-मौलवी तेरे साथियों को बहकायेंगे और वे तेरे को मारेंगे-पीटेंगे।''

बोले : ''कुछ भी हो जाय बाबा !...''

महाराज ने मंत्र दे दिया। मंत्रजप से उसे शांति मिली, भजन का रस आने लगा, वह तो मौज में आ गया। घरवालों को और मुल्ला-मौलवियों को पता चला तो उसकी बराबर घुटाई-पिटाई हुई। धमकी दी : ''सुधर जा, कलमा पढ़ और हमारे सामने बोल कि मैं हिन्दू संत को छोड़ता हूँ, फिर से अल्लाह को, इस्लाम को मानता हूँ।''

रमजान बोले : ''किसको छोड़ना, किसको पकड़ना ? अपने को जानना है - ऐसा गुरु ने कहा है। मैं हिन्दू भी नहीं बना और मुसलमान भी अपने को क्यों मानूँ ? मैं भगवान का, भगवान मेरे; मैं अल्लाह का, अल्लाह मेरे।''

''ऐ रमजान के बच्चे !...'' डाँट-फटकार के, धक्का मार के अँधेरे कमरे में डाल दिया। रोज बाहर निकालते - थोड़ी देर समझाते, खाने को देते फिर कमरे में डाल देते। ३ दिन के बाद बोले : ''अब भी तू सुधर जा !''

बोले : ''आपकी बड़ी रहमत हुई जो आपने मुझे कमरे में धकेल दिया। ३ दिन मैं विश्रांति में चला गया, अल्लाह-ताला - राम के रस में खोया रहा। आप तो मुझे कोठरी में एक महीने तक बंद कर दो न !''

भाई व मुल्ला-मौलवी और भड़के, फिर पिटाई की। एक बार वह भाग के साँईं टेऊँराम के पास आया, बोला : ''बाबा ! मेरी तो खूब मार-पिटाई की लेकिन अंदर की खुशी और मौज बनी रही। शरीर को तो थोड़ी तकलीफ हुई परंतु आपने जो नाम और ज्ञान दिया, बाबा ! उस पर मैं कुर्बान जाऊँ...''

**भई ! वह फिर हिन्दू नहीं, मुसलमान नहीं, ईसाई नहीं, पारसी नहीं वह तो ईश्वर का सनातन स्वरूप हो गया।**

जो उसका होकर निरपेक्ष, निर्द्वन्द्व भाव में घड़ियाँ गुजारता है, भई ! वह फिर हिन्दू नहीं, मुसलमान नहीं, ईसाई नहीं, पारसी नहीं वह तो ईश्वर का सनातन स्वरूप हो गया।

तो संसार की नश्वरता और भगवान की महानता समझने से चित्त शुद्ध व एकाग्र होगा। अर्थात् जितना वैराग्य होगा, जितना विषय तुच्छ लगेंगे और भगवान रसमय लगेंगे उतना ही चित्त भगवद्रस से विश्रांति पाने में सफल हो जायेगा। अष्टावक्रजी राजा जनक को कहते हैं :

**मुक्तिमिच्छसि चेत्तात विषयान् विषवत्त्यज।**
**क्षमार्जवदयातोषसत्यं पीयूषवद्भज॥**

'प्रिय राजन् ! यदि तुम मुक्ति चाहते हो तो विषय-विकारों को विष के समान छोड़ दो और

पूरे परिवार के उत्तम स्वास्थ्य के लिए **सेहत और स्वाद का संगम**

## आँवला कैंडी (मीठी व नमकीन)

पुष्कर आश्रम गौशाला से जुड़ी जंगल की शुद्ध भूमि, जो गोधूलि, गौ-खाद, अन्य शुद्ध खाद, अत्यंत शुद्ध जल से सम्पन्न है, उसमें उपजे ताजे आँवलों से तैयार की गयी यह कैंडी स्वास्थ्य एवं साधना में सहायक है। यह स्वादिष्ट, शक्तिप्रद एवं विटामिन 'सी' से भरपूर है। बच्चों को बाजारू टॉफियों से बचाने हेतु यह स्वास्थ्यवर्धक उत्तम विकल्प है।

₹ १००
४०० ग्राम

**दीर्घायु व यौवन प्रदाता, विविध रोगों में लाभदायी**

## आँवला रस

यह वीर्यवर्धक, त्रिदोषशामक व गर्मीशामक है। इसके सेवन से आँखों व पेशाब की जलन, अम्लपित्त (hyperacidity), श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, बवासीर आदि पित्तजन्य अनेक विकारों में लाभ होता है।

₹ ७५
७०० मि.ली.

**पूजा, आरती आदि धार्मिक कार्यों में उपयोगी**

## कपूर

यह वातावरण को शुद्ध करनेवाला है। संक्रामक रोगों से सुरक्षा हेतु कपूर की पोटली बनाकर उसे सूँघना लाभदायी है।

₹९०
१०० ग्राम

**भूख व रोगप्रतिकारक शक्ति वर्धक**

## आँवला-अदरक शरबत

यह यकृत (liver) व आँतों की कार्यक्षमता, चेहरे की कांति, रोगप्रतिकारक शक्ति (immunity) व भूख बढ़ाता है। इससे पाचन ठीक से होता है एवं शरीर पुष्ट व बलवान बनता है। यह अरुचि, अम्लपित्त (hyperacidity), पेट फूलना, कब्ज आदि अनेक तकलीफों में एवं हृदय, मस्तिष्क व बालों हेतु लाभदायी है।

₹ ९५
८७५ ग्राम

**यकृत के लिए वरदानरूप**

## घृतकुमारी स्वरस (Aloe vera juice)

यह विविध त्वचा-विकारों, पीलिया, नेत्र व स्त्री रोगों, आंतरिक जलन आदि में लाभदायी है। त्रिदोषशामक, जठराग्निवर्धक एवं यकृत (liver) के लिए वरदानरूप है।

₹ ८०
५०० मि.ली.

**श्रेष्ठ बल्य रसायन**

## अश्वगंधा चूर्ण व टेबलेट

ये सप्तधातु, विशेषकर मांस व वीर्य वर्धक एवं बल व पुष्टि वर्धक श्रेष्ठ रसायन हैं। ये स्नायुओं व मांसपेशियों को ताकत देते हैं, वात-शमन व कदवृद्धि करते हैं। धातु की कमजोरी, शारीरिक दुर्बलता आदि के लिए ये रामबाण औषधियाँ हैं।

₹ ८०
१०० ग्राम

₹ ६०
७५ ग्राम

**भूखवर्धक, रोगप्रतिकारक शक्ति वर्धक, रक्तशुद्धिकर**

## पंचरस

मधुमेह, हृदय की रक्तवाहिनियों के अवरोध, उच्च रक्तचाप, रक्त में वसा (fat) का बढ़ना आदि रोगों में लाभप्रद। पाचनशक्तिवर्धक, कृमिनाशक एवं रक्तशुद्धिकर अनुभूत रामबाण योग।

₹ १२५
५०० मि.ली.

**दीर्घायुप्रदायक श्रेष्ठ रसायन**

## गिलोय चूर्ण

गिलोय बल-बुद्धिवर्धक, सप्तधातुओं को बढ़ानेवाली, साथ ही कई रोगों का नाश करनेवाली रसायन औषधि है। यह जठराग्नि को बढ़ाकर शरीर में से आमदोष (कच्चे रस) को दूर करती है जिससे अनेक रोगों से सुरक्षा तो होती ही है, साथ ही रोगों का नाश भी होता है। यह रोगप्रतिकारक शक्ति को बढ़ाकर संक्रमणजन्य अनेक रोगों से रक्षा करती है।

₹ २०
७५ ग्राम

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ७३५१११३७५२. ई-मेल : contact@ashramestore.com

# योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रमों एवं विद्यार्थी शिविरों द्वारा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास

RNI No. 48873/91
RNP. No. GAMC 1132/2024-26
(Issued by SSPOs Ahd, valid upto 31-12-2026)
Licence to Post without Pre-payment.
WPP No. 08/24-26
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 1st to 17th of every month.
Date of Publication: 1st June 2026

दहतोरा, जि. आगरा (उ.प्र.)

रेवाड़ी (हरि.)

तिलपत, जि. फरीदाबाद

बल्लभगढ़ (हरि.)

नगला हजी, जि. अलीगढ़ (उ.प्र.)

हैदराबाद

कुसुमिता, जि. क्योंझर (ओड़िशा)

वल्लभीपुर, जि. भावनगर (गुज.)

मछलीशहर, जि. जौनपुर (उ.प्र.)

धौली-भुवनेश्वर (ओड़िशा)

बार्शी, जि. सोलापुर (महा.)

## सत्शास्त्रों के सार 'ऋषि प्रसाद' को हर हृदय तक पहुँचाने में लगे पुण्यात्मा

पठानकोट (पंजाब)

बिलासपुर (हि.प्र.)

ग्वालियर (म.प्र.)

आगरा

वाराणसी (उ.प्र.)

भेटासी, जि. आणंद (गुज.)

जम्मू

धौली-भुवनेश्वर

## तपती धूप में राहगीरों को शरबत पिलाकर दी गर्मी से राहत

अहमदाबाद

बीड (महा.)

धनबाद (झारखंड)

भटगाँव, जि. रायपुर (छ.ग.)

पानीपत (हरि.)

बेंगलुरु

सातारा (महा.)

वाराणसी (उ.प्र.)

सागर (म.प्र.)

नंदिनीनगर, जि. दुर्ग (छ.ग.)

भोपाल

परभणी (महा.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

**आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें :** Rishi Prasad ऋषि प्रसाद | Rishi Darshan ऋषि दर्शन | Lok Kalyan Setu लोक कल्याण सेतु

**स्वामी** : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : रूपनारायण भगवानसिंह लोधी **मुद्रक** : विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : श्रीनिवास र. कुलकर्णी